श्री गुरुदेव

संत श्री जैरामदास उर्फ लहरी महाराज
रचित

लहरी ज्योति बोध

हिन्दी भजनावली

किमत ६-०० रूपया

॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

ॐ

लहरी ज्योति बोध

हिन्दी भजनावली

: लेखक :

संत श्री जैरामदास उर्फ लहरी महाराज

प्रकाशन तिथी

२० जुलाई १९९७

किमत ६–०० रूपया

प्रकाशक–

संत श्री जैरामदास उर्फ लहरी बाबा

प्रबंधक–

लहरी आश्रम

मु. पो.– कामठा

तहसील– गोंदिया

जिल्हा– भंडारा.

तृतीय आवृत्ती १०००

सर्वाधिकार प्रकाशक के स्वाधीन

पुस्तक मिलनेका पत्ता–

लहरी आश्रम कामठा

पो.– कामठा

तह.– गोंदिया जि.– भंडारा

मुद्रक– प्रवीणकुमार बबनलाल पशिने

नव दुर्गा प्रिंटींग प्रेस,

राम मंदीर वार्ड, भ डा रा.

फोन नं. ५४४३०

संत श्री जैरामदास उर्फ लहरी महाराज, कामठा

आश्रम : कामठा, त. गोंदिया जि. भंडारा

जन्म तारीख ७–१२–१९२२

– अनुक्रमणिका –

भजन	पृष्ठ
१ वो दाता रे ऽऽऽ	१
२ साथ हमारे धर्मनीति है	२
३ देखी हैं हमने सत्य की	२
४ सत्य पे चलना आसान	३
५ भक्ति मे शक्ति का जोश	४
६ सोई किस्मत कों अजमानें	५
७ ये अंखिया प्यासी दर्शन की	६
८ तीरथ मंदीर घुमता क्यों	७
९ मेरे मन की प्यास न बुझे	७
१० आत्मा के लहरों मे छुपा	८
११ जैसा मुझे आदमी मिले	९
१२ व्यसन बढ़ गया	९
१३ कोई बताये ज्ञानका बल	१०
१४ हो गरीब पर ईमानदार	११
१५ हम धर्म नहीं बेचेंगे	१२
१६ समय सुचक ज्ञान नहीं	१२
१७ जीना और मरना	१३
१८ प्रकृति को देखकर	१४
१९ बैठ रहोगे तुम	१५
२० नैनो का तारा	१५
२१ मुझे प्यारा, किसान	१६
२२ भारत यहीं कुणबी का	१७
२३ काम करो तब भोजन पाओ	१७
२४ सबका भला जो चाहता	१८
२५ है प्रभु वह तेरे जैसा	१८
२६ इन्सानियत की करे पुजा	१९
२७ जो हो गया है	२०
२८ जहाँ वहाँ पिया का बासा	२०
२९ गाओ सतनाम दिल खोलके	२१
३० समय का इंतजार करते चले	२१
३१ रहे नहीं शरीर का भाग	२२
३२ जो कुछ भी है	२३
३३ मचले मन देखकर	२४
३४ श्रद्धा सत भावना की वृत्ती	२५
३५ हमसे कैसी प्रित जुडे	२५
३६ आत्मा से आत्मा, मिलाते	२६
३७ दिया उसका ही भला,	२६
३८ हम ना पंथ के भुखे	२७
३९ राम नाम बीन नैया तेरी	२८
४० यह है संतो की बानी	२९
४१ अब आनेवाली पिढीको	३०
४२ वो छलीया छलीया कब	३०
४३ तेरे मेरे नाते युग	३१
४४ कन्हैया रे कन्हैया	३२
४५ विद्वान ज्ञान से जाना जाय	३२
४६ प्रगटे शेगांव मे गजानन	३३
४७ चिंतनम, सुकरम, ये धरम	३३
४८ आज दुनिया मे मानव ने	३४
४९ जो राम का बन गया	३५
५० सुनो भैया संतोकी	३६
५१ चेले बनानेंकी सोख	३६
५२ आज अलाली से	३७
५३ परखेना पिर पराई	३८
५४ पहले अपने दिलको टटोलो	३८

भजन	पृष्ठ
५५ तु मनकी आँखे खोल नरा	३९
५६ हर गीतमे तु	४०
५७ श्रद्धा भाव दृढ़ जिसके	४०
५८ अलालीसे किया उसने	४१
५९ ये तन मलीन	४१
६० तेरी लगन हो भजन	४२
६१ जीस काम को जो करता	४२
६२ निष्काम कर्म से जो	४३
६३ ये मनके मन चले	४४
६४ गरीबोकी दशा ये देखी	४४
६५ दिल जानते ईश को	४५
६६ दर्द को मेरे कोई न जाणे	४५

भजन	पृष्ठ
६७ जिसने देना ही देना सिखा	४६
६८ महामानव का संदेशा	४७
६९ जो गरीबो की सुने	४८
७० भाविक पिढ़ी हो संतकर्मी	४८
७१ वास्ता मेरा, किसी के	४९
७२ मानवकी भ्रष्ट हुयी नीति	५०
७३ राग आते है पाप रस्ते	५१
७४ ढोंगी लोग करते है	५१
७५ इंसानियत को	५२
७६ संतो से जुबा	५३
७७ इंसानियत की पुजा	५४
७८ किसानो के बलपर आरती	५५
७९ आरती	५६

भजन १ (तर्ज-वो साथीरे तेरे बीना भी क्या जीना)

वो दाता रें, ऽऽऽ तेरेबीना ये, जग सुना
अंधियारा राहों में, छाया है आंखों में
तेरे बीना कुछ सुझेना ॥ टेक ॥

तेरे हाथ में सत्ता सारी, प्यासी अंखीयां रोये मनमें
डगमगाये नैया मेरी, जीआ घबराये वो क्षण क्षण में
कौन ये दुःख जाने, मैं जानु तू जाने,
तुझसे छुपा है कोईना ॥ १ ॥

हर घर घर में, वास है तेरा, क्यों करते हो आनाकानी
रहम हमारी तुम्हें न आती, हिम्मत सारी जाये खिसकती
प्रेम को तोडो ना ऽऽऽ चरणों में लेलो ना
दास की सुनलो करूणा ॥ २ ॥

तुम बिन दुःखडा कौन रहेगा, तेरे हाथ में हमरी डोरी
चाहें बनाले, चाहे बिगाडे, कभी छुटे ना प्रेम की डोरी
तेरे बीना मेरा ऽऽऽ मेरे बीना तेरा,
दोनो के काज बनेगा ॥ ३ ॥

जैराम कहे मेरे स्वामी, कहते तुझे सब अंतर्यामी
हममें बताओं, क्या है कमी, क्यों करते हो आनाकानी
तडपे जीआ मेरा, बरसे नैनों धारा,
तेरी होशीयारी समझेना ॥ ४ ॥

भजन २ (तर्ज-सात अजुबे इस दुनिया में)

साथ हमारे धर्मनीति है, सत्य से है प्रीति
काज हमारे, कौन बिगाड़े किसकी चले ना हस्ती ।। टेक ।।
नियम संयम है साथी हमारे, सुखदाई,
बंधु भाव की प्रीति रखकर मिताई

मर्यादा का फर्ज निभाना, सुख दुःख में साथ देना,
किसी जिवों का द्वेश न रखना, सही बात है जचती ।। १ ।।

दुनियां की उलझन सें, क्या लेना देना,
हीत परख कर अपना, सही राह चलना
दोस्ती ना किसी सें करते, कभी बैर किसीसे ना रखते
प्रेम ही देते, प्रेम ही लेते, यही हमारी मती ।। २ ।।

भला सभी का हो, इससे मिले शांती
दुःख ना देखा जाय, किसी की हो अनीति
आत्मा ये हरदम तड़पे, रूके से ये ना रूके
दिल में आग भडकती जाये, जैसे सुई है चूभती ।। ३ ।।

जैराम कहें श्रद्धा में सब मिलता है
जैसे जिसके भाव वो वैसा पाता है
निष्ठा में हीं है प्रतिष्ठा, दृष्ठा में ही है अदृष्ठा
अटल सिद्धांत मनमे जिसके, पाता है वो मुक्ति ।। ४ ।।

भजन ३ (तर्ज-सुनी जो उनकी आने की आहट)

देखी है हमने सत्य की बानी, संकट में उसको
अजमाया हमनें
हारे ना कभी; हिम्मत वो अपनी,
धैर्य से जीना सिखा है हमने ।। टेक ।।

दृढता के है, सिद्धांत अपने,
दानव को, मानव बनाया हमने
सेवा की वृती दिखा, दिखा के,
धर्म से जीना सीखा है हमने ॥ १ ॥

नीति से प्रीति, रखी है हमने
बंधुत्व नाता, निभाने हमने
गरीब अमीर की, दरार मिटाने
अस्पृस्यता भूत भगाने हमने ॥ २ ॥

बल बुते जीना, खाली न रहना,
मेहनत का खाना, पसन्द है हमको
समाज पिछडा, अज्ञान मिटाके
मानवता का पाठ भरना नस नस में ॥ ३ ॥

जैराम कहें मजहब हमारा
धर्म नीति सें हो भाई चारा,
सभी पंथो से नाता निभा के
सत के डगर पर, चलना है हमकों ॥ ४ ॥

भजन ४ (तर्ज- सुनी जो उनके आने की आहट)

सत्य पें चलना आसान नहीं है
मानव तन पाया, मानव नही है
कर्तव्य पालन, किया ना उसने
जिवीत रहकर मरा वोही है ॥ टेक ॥

उदर तो सभी, भरते रहते है
पशु भी जीना, सिखे रहते है
मानव का फर्ज, यह नही है
इहपर साधा ईन्सान वोही है ॥ १ ॥

कितने भीं शास्त्र पठन किया है
तो भी वो ज्ञानी, अधुरा ही है
आत्म तत्व को, जाना न जिसने
पिर पराई जाना नहीं है ॥ २ ॥

साधु संत का भेष बनायें
ठग मंत्र के गाने वो गाये
पर बुद्धो पर, विश्वास करे
अनुभव खुदका उसको नहीं है ॥ ३ ॥

कहता है जैराम, संतो की बानी
वेदो ने नेती नेती, कहीं है
स्वयं की निर्मित उनकी है भाषा
अंत ना उसका किसनें पाया है ॥ ४ ॥

भजन ५ (तर्ज- बम्बई से आया मेरा दोस्त)

भक्ती में शक्ति का जोंश, उसको ग्रहण करो
बातों पें ध्यान रखो, सच्ची राह धरो ॥ टेक ॥

साथीं ना कोई तेरा, सब यह झुटा पसारा
ना कोई तारन हारा, सतो का ले ले सहारा
छोड़ो ये बातें झूठी, प्रभु से प्रित करों ॥ १ ॥

उमरीयां बीत चली है, अंजल जल के जैसें
अरें नाता जोड़ रखा हैं इस ठगनी माया हैं
छोड़ो ये सपनें, सुखमय जिवन करों ॥ २ ॥

पलका नहीं है भरोसा, उड जायें कब हंसा
तन यें माटी के जैसा, रह जायेगा सोचा
अमर तत्व जानों किर्ती छोड़ मरो ॥ ३ ॥

कहता है जैरामदास, प्रभु है तेरें पास
अरें मिलनें को आस, जन्म मरण छुटें फास
दंता ना हीले जीवली, ऐसा भजन करों ॥ ४ ॥

भजन ६ (तर्ज-सुन भई चाचा)

सोई किस्मत कों अजमानें, जाग जारें तू अनजानें
अच्छे कर्म का करले वादा,
सत मारग सें, नित जलते जा2 ॥ टेक ॥

संतो का मानले कहना, बडो का आदर करना
प्यारे सच हरदम बोल

जिसने प्रभु से नाता जोड़ा, सुख शांती वो पायेगा
सबका भला जो चाहता है, इस जग से वो तर जायेगा2
दीन दुःखो को जो तरसायें, और अभीमान को बात करें
माया के सपनें देखें, जींदे रहकर है मरें2
इसलिए वेदो नें कहा है ॥ १ ॥ अच्छे
धर्म की राह धरना, अनादर सें नित डरना

संत इशारे को तू तोल

हमको वचन निभाना है, हरियाली जिवन में लायेंगे
प्रभु नाम को गाना है, ज्योती से ज्योत जलायेंगे
सुख सभी को पहुँचायें, और समता के भाव धरें
हीत अपना ही वो परखे अनहीत से रहे परे2

इसलिये यहाँ आये है, मानव धर्मका ॥ २ ॥ अच्छे

अमर तत्व कों पाना, प्रेम गंगा बहाना
निज धन, है अनमोल
जिसनें देखा एक ही सबमें, फिरना कमतरता रहें
जिधर भी वो मुड जाता है उधर प्रभु को पाता है2
जो ऐसा नाता निभायें, भवसीन्धु से तरें
अपने आप को देखें सुरत छोड फिरत धरें2
इसलिए जेराम कहता, अच्छे कर्म का ॥ ३ ॥

भजन ७ (तर्ज- मै तुलसी तेरे आंगन की)

ये अखीयां, प्यासी दर्शन की,
भायें नहीं, भायें नहीं ये रीत, दुनीयां की ॥ टेक ॥
प्यास बुझा बालक हुं तेरा, कोई नही मेरा, तेरा ही सहारा
बिनती सुनलो दीनन की ॥ १ ॥

धैर्य देजा, मुसीबत का मारा, बेसहारे का तू ही है सहारा
मोहे डर लागे डुबन की ॥ २ ॥

क्षण क्षण, धिरज, खिसक रहा है, माया सागर देये हिलौरा
मांगु भीख तुझे, रक्षण की ॥ ३ ॥

जेराम कहे अनाथों के नाथ, मेरी डोरी तेरे हाथ
नजर घुमाओ दया की ॥ ४ ॥

भजन ८ (तर्ज- दरपे आया हुँ)

तीरथ मंदीर घुमता क्यों, पुजले चलता फिरता देव
करले सेवा, गरीबों की, रखकर के श्रद्धा भाव ॥ टेक ॥

हर जगह है वस्तु एक, जड़ चेतन खोज के देख
बनी प्रकृतियाँ अनेक, हम तत्व से हैं एक
गुरू बीना मिले ना सार, करले मनमें तू विचार
कमजोरी दृष्टी की है, भ्रम द्वेश का मारे ताव ॥ १ ॥

शंका में है डुबा, उमर कर रहा तबहा
नट खट चलाये जुबा, माया का पडा धब्बा
शांती न कहीं पाया, जिवन दुविधा में खोया
कुटनीति मन में है, मजधार में अडी नाव ॥ २ ॥

मैं तू की भड़की ज्वाला, अंधा देखन उजियारा
भटकत फिरे मारा, तू मुढ़ गंवारा
मृग नाभी कस्तूरी, पास रहकर भिकारी
जैराम कहता है, समता का है अभाव ॥ ३ ॥

भजन ९ (तर्ज- अबके ना सावन बरसें)

मेरे मन की प्यास न बुझे,
इस दुनियाँ के सौंदर्य से ॥ टेक ॥

आस मेरी मिलनें की, प्रभु श्रीराम सें
प्रीति जुड़ें मेरी, जीन स्वरूप सें
इच्छा नहीं है मेरी, किसी के धन दौलत से ॥१॥

काम क्रोध, हरदम, अड़े राहों पर
और बार बार मै, खाऊ ठोकर
जिआ मेरा मचले यहाँ पर, दुरंगी नश्वर
जग वालो सें ॥ २ ॥

भटकते ज्वाला, तनमें, पिआ को देखन
उसके बीन यें, तरसे है नयन
सहारा नही है, किसीका ऽ ऽ ऽ
गंगा जमुना निर वरसे ॥ ३ ॥

किया है संकल्प, दृढ़ मनका
रखकर श्रद्धाभाव, मार्ग भक्तिका
कहता है जै रामदास ऽ ऽ ऽ
मुझे लगालो गुरु चरणों सें ॥ ४ ॥

भजन १० (तर्ज- भक्ति के मंदिर में छुपा)

आत्मा के लहरों मे छुपा, भंडार ब्रह्म के ज्ञानका ।
जिवन के कल्याण का, देखो मुक्ति धाम का ॥ टेक ॥

अमोल रत्न है राम नाम ये, किमत ना कोई कर पाये
बिरले ही इस मर्म को जाने, प्रितम से प्रित जोड़ लीए
भक्तों का स्वहीत भरा है, प्याला है अमृत का
मानव के उत्थान का ॥ १ ॥

नाम का स्वाद, रसना में आयें, मिटने से ना मिट पाये
रंग का कभी भंग ना होवे, नशा दुगूणा चढ जाये
रही ना फिकर, किसी चीज की ऽ ऽ ऽ मतवाला
हरी नाम, अटल वो सिद्धांत का ॥ २ ॥

सारा जग ये बैरी होवे, आसमान भी ढल जाये
तन, मन, धन, न्योछावर किया, सबको एक मे अजमायें
जैरामदास कहे सुनो भाई, ऽ ऽऽ पायें पद निर्वान का
पाये पद निर्वान का ॥३॥

भजन ११ (तर्ज- हमसे क्या भुल हुई)

जैसा मुझें आदमी मिले, वैसी मेरी बानी चले
वैसा उसको उत्तर मिले, चाहें दुष्ट सज्जन मिले ॥ टेक ॥
जैसे को मैं तैसा हूँ, धर्म नीतिमे दृष्टा हूँ
कर्म मार्ग का सृष्टा हूँ, कभी सत का पथ, ना भूले ॥१॥
चाले वो कितनी ही चले, चाले चले मन चले
उनकी हस्ती नही जो, मेरा कुछ बिगाड़े
देखो पछताकर वों, अपने ही हाथ मले ॥२॥
इन्सानीयत की कदर, उसको सुनता हुँ उजर
दया भावना नगर मेरा, बात परमानंद की चले ॥३॥
जैराम कहे दिलदार का, दिलदार हूँ ही मैं
दुश्मनो के लिए हरदम तेज तलवार हूँ मैं
इस देश के लीए, जान चली जाये भले ॥४॥

भजन १२ (तर्ज- जैसा देश वैसा भेष)

व्यसन वढ गया, शोषन बढ़ गया, छल का जमाना
भिडो लढो यही बानी, जिधर उधर गाना
चाहे जैसी मर्जी आये, अनिती सें चलना
बुराई से चलना, फैसन मे रहना ॥ टेक ॥

कैसी है नीतिया दानवता के भोग,
हाहाकार फैला, फैला बेशरमी का रोग
सज्जन कितना समझाये मानेना कोई,
इन मुर्खो को क्या समझाये, है रे यें उल्लु

व्यर्थ बोलु ना बोलु रे,
अब तुम छोड़ दो ऐसे ये धंधे
अच्छे काम में लग जा बंदे सही राह चलना ।।१।।

मन को रखले काबू में तू, दारु है बेकार,
इसने कितनो के बिगाडे है रे ये घरदार

इसका असर ऐसा होता है, तन होवे बेकार
बीवी बच्चे भुखे रोते, घुमे दारोदार

बचके चलना चलना २ रे
बैराम कहे प्रेम देंना औंर प्रेम लेना,
तेरी होगी मानव मे, रे, ये गणना ।।२।।

भजन १३ (तर्ज- पंडितजी मेरे मरने के बाद)

कोई बताये ज्ञानका, बल, धन, तन, जाये पल में ढल
गर्व मे यें झूमें रहते, शेखी अपनी बतलायें
बड़प्पन की अकड रखकर, मन के मांडें वो खोये
झुठे बजाते रहते है गाल, होवे न इनके वादे सफल ।।१।।

इससे किसीको, शांती ना मिली, परहीत की ना निकली बोली
स्वार्थ में ही, उमर गवायें दीन, दुःखीयों की ना भरी झोली
गंदे बिचार, मन में रखकर, दुनिया से किया इसनें छल ।।२।।

भरोसा ना इसका, नीति धर्मोपर, सत्य के ना पथ को देखा ।
जिवन बिताये पेट के खातीर,-
हीत अपना कभी ना परखा ।।
पाप पुण्य का विचार न किया, अंत मे रोये हाथ को मल ।।३।।

जैराम कहे क्षणिक सुख, मिटे न आत्मा की भुख
आत्म ज्ञान बीन, मिले न शांती, राम नाम है सही प्रचिती
बलधारी की, चले न हस्ती, ब्रम्ह बोधका जिसमें हो बल ।।४।।

भजन १४ (तर्ज- एक प्यार का नगमा है)

हो गरीब पथ, ईमानदार, कर्तव्यता के हो विचार
नीति नियम, पर चलकर, उसने पाया जिवन का सार ।।टेक।।

सब जिवों से ही प्रीति, न्याय धर्म की हो नीति
दिल में सद्भाव वृत्ती, वो ही देवे सुख शांती
रखे समता का व्यवहार, मर्यादा का भाई चार ।। १ ।।

नाता हक का निभाता है, मेहनत पर जिता है
सकट से गुजरते हुयें, धैर्य अपना ना खोता है
चाहें आसमां भी ढल जायें, प्रण का हो, वो सरदार ।। २ ।।

साक्षी आत्मा को, रखकर शब्द बोलि वो तौल तौल कर
सुने अनाडी होवे ज्ञानी, पल में छूटे नादामी
ब्रम्ह ज्ञान का हो संचार, कहीं ना हो उसकी हार ।। ३ ।।

जैराम परिश्रम पर, पाया है परमेश्वर
पग रखता जहाँ कहीं पर मिलि माटी सोना बनकर
ऋण छोड गया जगपर; मरकर भी वों अमर ।। ४ ।।

भजन १५ (तर्ज-स्वतंत्र)

हम धर्म नहीं बेचेंगे; अगर भारतवासी है तो
हम धर्म पर जान देंगे; अगर भारतवासी है तो ।।टेक।।

मिला है एक बार नरतन, करता है इंतजार
यह समय ना करो बेकार ।।१।। अगर

संत का ईशारा, बारबार, सपना है यें संसार
सब एक है परिवार ।।२।। अगर

जिवन की रोशनी, दुर करती है अंधकार
जिवो सत्य के आधार ।।३।। अगर

स्वकर्म सें जियेंगे, स्वकर्म सें मरेंगे
हम तत्व ना बदलेंगे ।।४।। अगर

है ज्ञान हममें, देयेंगे हम सबमें
ये भेद मिटायेंगे ।।५।। अगर

कहे जैराम, ईश प्राप्ती करना, यही ध्येय हमारा
वतन के लिए जिना और मरना ।।६।।

भजन १६ (तर्ज-आज आये है·····)

समय सुचक ज्ञान नहीं जिसमें,
वो इन्सान इन्सान नहीं हैं

धर्म नीति नहीं पास जिसकें
वो मानव मानब नहीं है ।।टेक।।

सत्य प्रेम करुणा नहीं है, जिसकें हृदय में
वो दानव सही है

पर दु:खको जाना नहीं जिसनें
वो ज्ञानी ज्ञानी नहीं है ।। १ ।।

सभी में एक को देखा कहीं पर,
दुजा ना परखा वोही समदृष्टा है

आत्म मिलन बंधु प्रेम न जिसमें,
वो संत सत नहीं है ।। २ ।।

ना बैर किया, किसीसे ना दोस्ती,
वो ही जग में रहकर निराला है

कहता जैराम इस, मर्म को न जाना
ज्ञानी रहकर वों अनजाना है ।। ३ ।।

भजन १७ (तर्ज- शाम तेरी बंशी)

जिना और मरना, येही देह का काम
कभी बने शाम, कभी बने जैराम ।। टेक ।।

जैसे जैसे समय बदले, वैसे लेते रुप
वैसा बदले जमाना, वैसा लेते रुख
देवे सबको शांती सुख, यहीं उसका काम ।। १ ।।

व्यवहार असुरों के साथ, वैसी करे बात
अहंकारी का अहंमिटाके, छूडाये पक्ष पात
शांतो का सम्राट बनाके, मिटाये कूनीति तमाम ।। २ ।।

भक्तो के हीत कारण, प्रभुता भूली सारी
झूठे बेर खाकर, शबरी सें प्रित जोडो
प्रेमीयों के प्रेमी, दयालु उसका नाम ॥ ३ ॥
जैरामदास कहें हम भिन्न प्रकृति सें
सब प्राणी हम एक ही, तत्व मसीके
छोडों ये बैर भाव, भूलो ना देख चाम ॥ ४ ॥

भजन १८ (तर्ज- सोमवार को हम मिले)

प्रकृति को देखकर, करते जा व्यवहार
वैसा ही पाते जा, तुरे सदा आहार
इससे रहेगी तेरी, तबीयत बहाल
नीति नियम को नही निभाया तो, होगा तेरा बेहाल ॥टेक॥
मन तो चाहता है सदा, खट्टा मिठा खाना
इन्द्रियों मे है कमजोरी, होवे व्याधी बढाना
जितनी शक्ति हो उतनी, भक्ति करो जोरदार ॥१॥ नीति
बुरे नियमोसें तुम्हे, ख्याती नही मिलेगी
जबरदस्ती का बझ सरपर, लादे फजिती होगी
देखी सत के पास कभी आये ना वो काल ॥ २ ॥ नीति
बोलना है तो हरदम, तोलकर ही बोल
तेरे ज्ञान विचारो का, होवे ना कभी फोल
तन छुटने पर अमिट किर्ती, रहेगी कई साल ॥ ३ ॥ नीति
जैरामदास कहे मर्यादा का फर्ज करले तू अदा
उसी पर ही खुश रहते है प्रभुजी वो सदा
दुर्गुणो को वो हरदम, करते जा टाल ॥ ४॥

भजन १९ (तर्ज-श्याम तेरी बंशी पुकारे)

बैठे रहोगे तुम, दुनीयां को देखते
हर समय रोडे आये, रहेंगे लटकते ।। टेक ।।

ऐं मुसाफीर तेरी, मंजील है दुर
जो करना उसे ना करना, हो गया मजबूर
माया ममता में, जा रहा अटकते ।। १ ।।

मंजील के राहो पर, काम क्रोध पहाड़
शेर, चीत्ते, भालु, देवे वो दहाड़
कई जन्मोसे तू, आया है भटकते ।। २ ।।

जब तूने पाया हैं, मानव का तन
सुवर्ण सधो का तू, करले जतन
व्यर्थ जनम जाये, रोये सर पटकते ।। ३ ।।

नेकी बदी के है, यहाँ दो ही रास्ते
सोच करके रख, कदम आस्ते आस्ते
कोई ना यहाँ साथी, जेराम जाये जताते ।। ४ ।।

भजन २० (तर्ज-ओ शंकर मेरे......)

नैनो का तारा, जिवन का उजीयारा
हारे का है वो रखवाला, पिलाये ब्रम्हरस का प्याला
हो कोई पिने वाला ।। टेक ।।

पुर्व पुण्यसे नरतन मिला, कई जन्म का था मैं भुला
नरका नारायण, बनानेवाला, अजब छबेला हिरा ।। १ ।।

मेरे जिवन की जिवन ज्योती, बिना तेल की है वाती
वो ही अज्ञानी का दाता, जो चरण सेवक बन जाता
उभारता उसका ही पलमें, ऐसी है किमीयां उसमें
नैया लगावें किनारा ।। २ ।।

सुखे पेड़ को, दे ये पानी, है यह ज्ञानी से भी ज्ञानी
इसके जैसा ना जगत में दानी, शेष शारदा थके बानी
सभी देवता का देवता,
ब्रम्ह विष्णु हारा ।। ३ ।।

जैरामदास कहे गुरु कृपा बीन, सारा जिवन है अंधियारा
शास्त्र पुरान, पढकर भी वह, हुआ नहीं है अबतक पुरा
चारो वेद नाम को पुकारे,
बरसाये अमृत की धारा ।। ४ ।।

भजन २१ (तर्ज मुझे प्यारा भारत मेरा)

मुझे प्यारा, किसान मेरा
देश धर्म का रखवाला ।। टेक ।।
तीन देवता यहाँ रखवाले, भारत के है यह सितारे
किसान मजदुर जवान हमारा ।। १ ।।
समझ जाये यह धर्म नीति को, कमतरता नहीं किसी जिव को
मिटे दु:ख यह सारा ।। २ ।।
कर्म से हो भाग्य उजले, राम नाम को फिर भजले
तब नाव लगेगी किनारा ।। ३ ।।
जैरामदास कहे जागो भाई, सत्य कर्मो को पकडो राही
सत्य अहिसा धर्म हमारा ।। ४ ।।

भजन २२ (तर्ज–गुण दोष हमारे)

भारत यह कुनबी का कुनबा, हल धरना धर्म हमारा है
अपने बल बुते पर जीना, यही धर्म हमारा है ।। टेक ।।

कभी किसी का फुकट ना वो खाता, परिश्रम पर भरोसा रखता
धर्म नीति का नाता निभाता, शिस्त का करारा है ।। १ ।।

धर्म नीति पर बली हो जाये, अधर्मीयो से नीत टकराये
प्राण की वह बाजी लगाये, हिम्मत कभी ना हारा है ।। २ ।।

दैवी सम्पती वह हैं इसमे, सत्य अहिंसा भरी नसनस में
बच्चो से बुढे के तन मन में, आध्यात्मीक का वह हिरा है ।। ३ ।।

जैराम आत्मा मे देखे परमात्मा, षड विकारो का करके खातमा
एक ही देखे सबके मुखमें, वही ब्रह्म हमारा है ।। ४ ।।

भजन २३ (तर्ज–गोरे गोरे चांद से मुख पे)

काम करो तब भोजन पाओ,
समाज सेवक कहलाओ ।। टेक ।।

आगे तुम सुधरोगे, जग सुधरेगा, मन बिगड़ेगा तो जग बिगडेगा
मन मे उचे भाव धरो, किसी का मुफ्त में न खाओ ।। २ ।।

पर धन पर जो मजा उडाये, वही चोर डाकु कहलाये
किमत न होवे उसकी जगमे, झुठी गाल न बजाओ ।। २ ।।

सुकर्म ही तुम्हारे साथी, जनता तुमसे करेगी प्रीति
तन जाने पर किर्ती रहे, अमर नाम को छोड़ जाओ ।। ३ ।।

अज्ञानता में भोली जनता, सतसंगत में लगवाया
संत तुकोबा मिरा बाईने, ज्ञान का अमृत पिलवाया
देश धर्म का विकास होवे, ऐसा नारा लगाओ ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे सुन भाई, दया धर्म से मिले रघुराई
कुटनीती को तुम छोडो, पर दुःख अपना कहलाओ ॥ ५ ॥

भजन २४ (तर्ज--चीत्ती राम माझ्या वसले)

सबका भला जो चाहता, खुश है उसपर विधाता
पड़े न कही कमतरता, किधर भी वो मुड़ जाता ॥ टेक ॥

नीति नियम से प्रित जोड़ा, मोह माया से मुखड़ा मोड़ा
दीन दुःखीयों का पिये दुःखड़ा, वो ही है सबका विधाता ॥१॥

श्रद्धा भाव हो उज्वल जिसके, प्रभु वशीभुत हुआ उसके
किया काम सारथी बनके, भक्तों के साथ वो रमता ॥२॥

शिस्त का हो रंगीला, ब्रह्म रस का पिने प्याला
उसने ही ब्रीद को, सम्भाला, हर जगह प्रभु को पाता ॥३॥

कहता है जैरामदास, धरी न कंचन कामीनी से आस
प्रभुजी है उसके पास, वो ही बुझाये सबकी प्यास
छोड़कर अमर किर्ती, निर्वान पद को पाता ॥४॥

भजन २५ (तर्ज--शिरड़ीला साई प्रगटले)

हैं प्रभु वह तेरे जैसा, भावना का भुखा प्यासा
लगे न सोना चांदी पैसा, हर घट में उसका वासा
हैं प्रभु ॥ टेक ॥

खोजले तू अपने मन में, देखले तू अपने तन में
वो बसा नहीं है बनमें, नहीं है तीर्थ स्थान में
खोजी हो तो तुरत मिल जायें, घुमो मत मृग धासा
हे प्रभु ॥ १ ॥

प्रकृति से हम है भिन्न, तत्व से हम एक जान
जब मिले सतगुरु से ज्ञान, टुट जाये चौर्‍यासी फासा
हे प्रभु ॥ २ ॥

कहता है जैरामदास, बहु दया होवे पास
शिल नम्रता की हो शिस्त, उसको मिला यह मर्म
हे प्रभु ॥ ३ ॥

भजन २६ (तर्ज–सजनरे झुठ मत बोलो)

इन्सानियत की करे पुजा, जाती पाती से क्या काजा
दया भावना की नीति जिसमें, उसके प्रेम मे ही आये मजा
इन्सानियत की ॥ टेक ॥

धनी हो या कोई ज्ञानी, गर्व गुमान हो जिसके पास
उससे ना मतलब रखे हम, दीन दु:खीयों की हमे गर्जा
इन्सानियत ॥ १ ॥

जिसकी हो अमृत बानी, सुनकर अज्ञानी बने ज्ञानी
उससे ही प्रीति बने धनी, वोही हमारा जिवन्त कलेजा
इन्सानियत ॥ २ ॥

जैराम कहे मानवताके सही रुप, उनकी संगत में मिले सही सुख
सतसग उनसे करते जा, अपना प्रेम देते जा,
और उनसे प्रेम लेते जा ॥ ३ ॥ इन्सानियत

भजन २७ (तर्ज-देखो वो दिवानो)

जो हो गया है, ब्रंम्हमय, उसका निकला संशय भय
किसीका न डर रहा ।। टेक ।।

देखो जिधर भी मुढ़ जाये, पग पग में प्रभु को पाये
हर जगह में एक वस्तु, नभ जल में है तूही तू
काष्ट और पाषाण है तू, देखा वहाँ ।। १ ।। किसी

पहाड़ से तू पत्थर कहलाया, पुजन से तू देव बन गया
नर से नारायण बन गया, भिन्न भिन्न है नजारे जहाँ वहाँ ।।२।।

एक से तू अनेक बना, भक्तोने तुझे एक ही जाना
तुझे बीरले ने ही चिन्हा, बहुरुपीया जैसे रहा ।। ३ ।।

इस मर्म को कठिन है समझना, बीरलेने ही इसको जाना
जाना वो तो हुआ दिवाना, जैराम गुरु कृपा से कहा ।। ४ ।।

भजन २८ (तर्ज–जारे जा वो दिवाने)

जहाँ वहाँ पिया का बासा, गुरु विन मिले न दिलासा
प्रयत्न लाखो कर प्राणी, मिटे न मन की आशा
बन में जाके धुनी रमाये, हट योग से प्राण चढ़ाये
काम क्रोध नित्य सताये, मिटी ना दिल की इर्षा ।। टेक ।।

कई शास्त्र का अध्ययन किया, भ्रम भ्रम में उमर गंवाया
किसी जिव की दया न लिया
तिरथ मंदिर रहा घुमता, भाव नही है दिलमे समता
रहा जैसा का वैसा

उठ बैठ बुरे काम करता, कुत्ता और बिल्ली जैसा
॥ १ ॥ जहां

ब्रम्ह ज्ञानी खुद को कहे, दुर्गुण में ही बहता रहे
झुठा दिखावे दिलासा
जैरामदास कहे ऐसे नर को, साधा नही इहलोक परलोक
धन दृश्य में मंडराया
धोका देवे हरदम दीन दु:खीयों को
मिले अंत में नरक वासा ॥ २ ॥

भजन २९ (तर्ज–यहां वहां सारे)

गाओ सतनाम, दिलखोलके,
टुट जायेंगे फैरे, जन्म मरणके ॥टेक॥

मन की हो, निर्मल वृत्ती, आत्म तत्व पाने मोती
निरामय हो तुम्हारी मती, चकोरे तरसे बुंद स्वाती
भक्त प्यासे रहते, हरदम ब्रम्ह रस कें ॥ १ ॥

द्वेश भाव, आगे संहारे, काम क्रोध यें, बकरा मारे
आत्मा राम से, प्रीति जोड़ो, सब जिवोको, कहदो हमारे
उससे दु:ख दुर, हो जायेंगे सबके ॥ २ ॥

बोल तुम नित, ऐसा बोलो, सबको मिले जिससे शांती
अमृत रस, भरा हो उसमें जिव की, मिटे भ्रांती
पिर पराई नहीं जानेतो, ज्ञानी भी रहे अधुरे ॥ ३ ॥

नियम कामिन में लगाओ ड़ंडा, यह चंचेल मन हो जाये थंडा
भेद भाव का, भेद मिटाके, नित फुट जाये हन्डा
हर तरफ देखो, नजारे प्रभु कें ॥ ४ ॥

जैरामदास, कहे तुम्हारी, बीगड़ी वो बन जाये
सोई किस्मत, सोई किस्मत को, तू अजमाले
सतसंग से ही, जिवन सुधारले ॥ ५ ॥

भजन ३० (तर्ज–नेकी तेरे साथ)

समय का इंतजार, करते चले
वैसे ही कदम बढ़ाते चले ॥ टेक ॥

इससे तुमको, शांती मिले, देर लगे भले
यह तो जिवन का खेल, जैसी चढ़े बेल
न जाने कब हो जाये फेल, उमरीयां कब ढ़ले ॥ १ ॥ समय

यह संसार, स्वप्न की माया, तन यह कंचन का घर बनाया
माया ब्रम्ह जहाँ वहाँ, ऐसी जगह नहीं छुटी कहाँ
देख देख क्यों तू भूले, परखे बीन न भाग्य खुले ॥ २ ॥

जिसने इस का मर्म जाना, हीत अनहींत को पहिचाना
जैरामदास कहे विवेकी बिचार, उसनें निकाला समय का सार
उन्होने ही इसको तौल भवपार हुये बिरले ॥ ३ ॥ समय

भजन ३१ (तर्ज–तेरे पुजन को भगवान)

रहे नहीं शरीर का भान, तब आये अंतर ज्ञान ॥ टेक ॥

सुख दुःख ये सब जाये, शोक ये रह ना पाये
काम क्रोध ये सब जल जाये, आशा तृष्णा ये मिट जाये
होते जिव ब्रम्ह पद में रममान ॥ १ ॥

ध्यानी ज्ञाता बने वहाँ का, दृष्टा बनावो ब्रम्ह जगतका
भजन करे वो निराकार का, खेल खेले सगुण निर्गुण का
पद पाया उसने निर्वाण ॥ २ ॥

विश्व को उसनें घर बनाया, जिव जगत को उसनें अपनाया
सम दृष्टी में, नयन बसाया, क्या किया, क्या उसनें पाया
सुध बुध ना रही नही ये भान ॥ ३ ॥

जैंरामदास कहे गुरु कृपा, मार्ग यही हैं तरनेंका
लेन देन नही हैं किसका, ज्ञान हुआ निज स्वरुप का
ज्योती चिन्मय आली शान ॥ ४ ॥

भजन ३२ (तर्ज– नशीब में जिसके जो लिखा)

जो कुछ भी हैं, अपनें को मिला,
उसमें गुजर करों, यही मेंरी सलाह ॥ टेक ॥
मन यह बड़ा पाजी मन चला, हरवक्त जिवके, पिछे लाये बला
देखो ऐसा हैं यह बावला ॥ १ ॥

इसकी हैं यह पैनी धार, इसकी चाल बड़ी रफ्तार
ज्ञान बुद्धी को देये भुला ॥ २ ॥

जब यह स्थिर हो जाये मानव सुख शांती को पायें
पिवे ब्रह्म रसका प्याला ॥ ३ ॥
रंग चढे जब, ब्रिषयानंद का, काम करे वो तब सैतान का
उठ बैंठ का खिलावे खेला ॥ ४ ॥
नरको नारायण बनाये यही, मोक्षको डगर दिखाये सही
ऐसी हैं इसमें कला ॥ ५ ॥

स्वर्ग नरक हैं इसके हाथ, विचार विवेक से करो साथ
नाव का सही हैं मलाह ॥६॥

जैराम कहे मन मेरा गुरु, भव सिंधु से यही उतारु
आत्म तत्व से हीं मिला ॥७॥

भजन ३३ (तर्ज– ये दोस्ती .....)

मचले मन देखकर, माया का तुफान
बिरले ने लगाया, इसका ये निदान, यहाँ वहाँ दुःख महान
॥ टेक ॥

भुल रहे, भटक रहे, देखो वो नादान
खुद की इन्हे पहिचान
मृग नाभी, रहते कस्तुरी, ऊमर खोयें भ्रम मे सारी
कही न मिलें इसको चैन ॥ १ ॥

अंखीयां रहते अंधे, मन के इरादे गंधे
भुल गये भगवान
उसको समझे अपना हीत, जोड़ी माया से ये प्रित
पाकर यह नरतन
रात और दिन, गाये यही गीत, धन न परखा रामरतन ॥२॥

कहे दास जैराम, माया है चंचल नार
जिवन को करे बेजार
सत संत सें पुण्यवान हुये पार
भुले धनी ज्ञानी यार
संत के कृपा बीन, कहीं नही कल्याण; उन्ही से जगमे ज्ञान ॥३॥

भजन ३४ (नर्ज– गीत गाता चल वो साथी)

श्रद्धा सत भावना की वृत्ती, निरामय बहाते चलो
अरे मानव SSS अंध विश्वास को हटाते चलो ।। टेक SS

तभी सुख शांती मिलेगी, तुम्हे, आत्म तत्व कीं खोज करे
दृढ़भाव ये मन मे धरे चिंतन से ही चिंता दुर करे
अरे मानवSSS शंका कुशंका आये इसे भुलाते चलो ।। १ ।।

त्याग वैराग्य के सिद्धांतोपर, नीति नियम से
यमका फास टुट जायेगा
द्वेश और भावना का काल, देखकर तुमको भुल जायेगा
अरे मानवSSS सभी प्राणी को हमेशा, अपना बोलो ।। २ ।।

परदु:ख अपना समझतें जाओ, अपनें परसे जमको देखते जाओ
तेरी सुरत भगवान जैसी जोकी होवे भावना वैसी
अरे मानवSSS अंतकरणमे सुविचार बसालो ।।३।।

वैसी छबी दिखे दृष्टी, ऐसे हीं खेल की देखो झांकी
जैराम कहे मन तेरा है दर्पन, अच्छा बुरा दिखे जन
अरे मानवSSS अब तुम अपने मन की आंखे खोलों ।।४।।

भजन ३५ (तर्ज– तेरे पुजन को भगवान)

हमसे कैसीं प्रित जुड़े, तुम तो जाती पाती में भुले ।। टेक ।।

हम तो सभी धर्म पथ ले, देश के और विदेशीयों के
किसी से ना वैर कियां कभी, सत्य अहिंसा कभी न भुले ।।१।।

सब जिव जगत है आत्मा, उसमे देखे हम परमात्मा
दुष्ट वृत्तीका करे खात्मा, ईश्वर नाम के हम रंगीले ।। २ ।।

निष्काम कर्म सें करो गुजर, किसकें धन पर नही हैं नजर
परिश्रम करते रहें तत्पर, तन भी जाये चाहें भुले ॥ ३ ॥
जैरामदास प्रेमका भुखा, सभी आत्मा का मै हूँ सखा
भाव मेंरा हैं समता का प्रभु मेंरे प्रण को निभाले ॥ ४ ॥

भजन ३६ (तर्ज– ज्योत से ज्योत जलाले चलो)

आत्मा सें आत्मा, मिलाते चलो
ज्ञान की सरीता बहाते चलो ॥ टेक ॥

उजले होवे भाव मनके, प्रभु तत्व पानें को
श्रद्धाभाव, जगी हो दिलमें, राम रतन धन पाने को
भक्ती की नशा SSS मे हरदम डोलो ॥ १ ॥
द्वेश न होवे किसी जिव का, भाव जगाओ नित समता का
नीती सें यें प्रीति करे, हीत की बातें होवे
न्याय गंगामें SSS नहाते चलो ॥ २ ॥
शांती सुख कें, हैं ये सितारे, अहिंसा के हैं मर्म हमारे
परम धर्म के लगाये नारें, अज्ञानता को मिटाये सारे
सत्य कें डगरपर SSS बढ़ते चलो ॥ ३ ॥
जैरामदास कहे, एक सहारा, गुरु देव प्यारा हमारा
ज्ञान बुद्धी का है उजीयारा, है सबका वों हितवाला
कर्तव्य को SSS कभी ना भुलो ॥ ४ ॥

भजन ३७ (तर्ज –अब अगर हमसे)

दिया उसका ही भला, नहीं दिया उसका ही भला
देता हूँ सबको सच्ची सलाह, मानें तुझको कोई बुरा
देता मैं उसको सच्ची सलाह, घोटे मेरा कोई गला ॥टेक॥

धर्म मेंरा यही है सबको सच्ची राह बताना
कभी किसी कों नही कुटनिती सें फसाना
जताता हुँ खुला खुला ॥ १ ॥

किसी को चीढ़ आयें मेरे बातो की
पर डगर ना छोडुं कभी मैं सत्य की
चाहे कोई जाये जला ॥ २ ॥

देखो किसीकी कभी नही मुझको फिकर
चाहे ज्ञानी भी हो धनी जबर
न्याय ही मेरा रखवाला ॥ ३ ॥

मैंने उसको ही हर वक्त अजमाया
सारे विश्व भर में मैंने एक ही पाया
सिद्धांत मेंरा कभी न ढ़ला ॥ ४ ॥

कहे जैरामदास नें पारस पाया
रामरतन धन बीन कुछ ना भाया
गुरु ने सिखाई ऐसी कला ॥ ५ ॥

भजन ३८ (तर्ज– अंखीयों के झरोखो से)

हम ना पंथ के भुखे, हम सेवक जनता के
संगी ना साथी किसी के, हम न्याय की तरफ झुके ॥ टेक ॥

मान बढ़ाई ना व्यापे, हम अटल है, आत्म तत्व के
पर धन की ना, रखे इच्छा, किसीकि मदत की, ना आशा
सिद्धांत कें हम पक्कें भरोसा भगवान पर रखे ॥ १ ॥

परिश्रम की, सुखी रोटी, हमे लगे हरदम मिठी
सुनते है हम, सबकी बातें, सत्त गुणि हमारा साथी
मुफ्त खाना ना हम सिखें, पक्ष पाती ना किसीसें ॥ २ ॥

जैरामदास कहे, हमारा हम पर, भरोसा
उससें ही ये मिलती है, हमको हरदम दिलासा
हम तो है दिलदार, सिर्फ दिलदार के ॥३॥

भजन ३९ (तर्ज--अंध श्रद्धा मे...)

राम नाम बीन नैया तेरी, पार न होवे रें इन्सान
लाखो प्रयत्न करे जो प्राणी, मिले ना उसको भगवान ॥टेक॥

गणगोत्र नारी पुत्र, मिले सभी योनी में
मानव जनम मुश्किल से मिलता, भुले मत तू गर्व में
कर्म से ही भाग्य सुधरें, पद पायें वो निर्वाण ॥१॥

जिसको तू अपना कहता, वह सब है झुंठा सपना
उसके पिछें उमर गंवाता, अंतःकाल होवें पछताना
यही सारी भ्रमना छोड़कर, पकडले तू गुरु चरण ॥२॥

चिंता में डुबे जा रहा है, अज्ञान मे तू बह रहा
कितने अड़ंगे खा रहा है, माया सागर मे डूब रहा
ध्यान न देता मानवता पर, हो रहा तू नादान ॥३॥

जैरामदास कहे रे बाबा, नरतन का तू खयाल कर
सत के पथ पे चल करकें, तू जीवन का उद्धार कर
गफलत में मत भुल तू प्यारे, पाले तू यह निजधन

भजन ४० (तर्ज-धन्य है तोहे देवकी माई)

यह है संतो की वानी जरा ध्यानमें लारे ज्ञानी
नही तो होगी परेशानी ॥ टेक ॥

राम मय करले अपना तन, राम नाम में लगाये मन
परखले तू अपना वतन, मतकर तू आनाकानी ॥ १ ॥

जिसनें संतो का सतसंग किया, जिवन में सुख शांती पाया
वाकी सब ने सब कुछ खोया, जन्म पाकर के किया हानी ॥२॥

भक्ति की बेला पीवे ब्रम्ह प्याला, पाया चारों ओर उजीयाला
हो गया वो फिर मतवाला, ये ही है रोशनी ॥ ३ ॥

जैराम कहे राममय किया घर, उसको रहा ना किसीका डर
सारी लंका जल गई पर, रही विभीषन की निशानी ॥ ४ ॥

भजन ४१ (तर्ज-गंगे तारुण्य तुझे)

अव आने वाली पिढ़ीको, हमे भावीक बनाना है
सत्य अहिंसा का मंत्र देकर के, श्रद्धा भाव को जगाना है
॥ टेक ॥

आये ना दिलमे कभी छल कपट, समता का ज्ञान सिखाना है
दया और भावना, और बंधु प्रेम नस नस मे भर देना है
शिखर मानवता का पा करके, दानवता को कुचलना है ॥१॥

गंधी रुढ़ीवाद पुरानी, इसको दुर हटायेगें
शत्रु से भी हम प्रेम करेंगे, आदर्श भाव सिखायेगे
गरीब अमीर को गले लगायेगे, रामराज्य हमे करना है ॥२॥

होवे अत्याचार किसी प्राणीपर, सब मिल कर उसे छुड़ायें
धर्म का मर्म समझें बीना, कर्मो में सुंदरता कैसे आये
आत्मीकता का नाता जोडकर हमे सदाचार सिखाता है ॥३॥

मुख से जो प्राणी हरदम, प्रभु का नाम गाता है
झुठी गाल जो बजाता है, उससें क्या कभी फल मिलता है
नाम के साथ कर्म भी जोड़े, वो ही श्रेष्ठ कहलाता है ॥४॥

जैराम कहे नीति पर हम प्राण देंगें, हम सतयुगी कहलायें
इससे ही देश समाज की उन्नती होगी, सारी मुसीबत दुर भगेगी
सुख और शांती, हर जिव को मिलेगी यह नवग्रह भगाना है
॥५॥

भजन ४२ (तर्ज–वो मतवा रे...)

वो छलीया छलीया कब तक चलेगा तेरा छल
दिखाये अपना तन का बल, दिखाये धन का बल ॥टेक॥
गर्व गुमान की बातें करता, दीन दुःखीयों को नित्य सताता
अपनी बढ़ाई खुद ही करे तू, भोले भालें को तू फसाता
तेरी ताकत जायेगी ढ़ल ॥१॥

मानव का तन तूने पाया, दानवताका मार्ग लिया
वाणीमे तेरे तथ्य नहीं है; असुरी वृती चलाया
किया है करनी मिलेगा फल ॥२॥

फुट कर निकले पाप और पारा, प्रभु का ना उसको सहारा
इहलोक, परलोक में, उसको, लगे कहीं ना थारा
अंत में मीये हाथ को मल ॥३॥

जैराम कहे जो सत्य पे चलता, जग में सब कुछ वो पा जाता
नेकी नेक काम, वदी है बदनाम, स्वर्ग नरक यही मिलता
मुर्ख समझले मेरे बोल ॥ ४ ॥

भजन ४३ (तर्ज – आपकी इनायते)

तेरे मेरे नाते युग युग के,
इन नैनो को, मेरे भुल पडी ॥ टेक ॥
मोह् माया अज्ञान अंधकार में,
घुम रहा हूँ अंधा बनकर, बनवन में
अंडज, पिंडज, उद्बिज जारज, योनी में
अगणित देह मिले आये ना समझमें
गुरु के कृपा बीन कोई ना परखें ॥ १ ॥ इन

हम तो ईश्वर तेरे ही अंश, तेरे बीद का हमें नहीं है होश
बुंद बुंदेले का सकल पसारा, जाने बीना लगे ना कोई किनारा
इसलिये यहाँ पर खाते गोते ॥ २ ॥ इन

अर्जून को बताया श्रीकृष्णने, सुर्य की उत्पत्ती देखी है मैंने
वीर धनंजय को भ्रम जब हुआ, बहु दिनों की उत्पति कहीं पुरखोने
शंका मिटाई विराट, स्वरुप दिखाके ॥ ३ ॥

संतो के पास है, ज्ञान ज्योती, उससे ही जनम जनम की मिले प्रचिती
जैरामदास देवे, सबको शास्वती, सतसंग में ही मिले अखंड शांती
समझे बीन ना जनम मरनके, फेरे चूके ॥ ४ ॥

भजन ४४ (तर्ज — हे मानवा रे....)

कन्हैया रे कन्हैया, बतीया मोरी सुनले
दर्शन देदो घनशाम, पुरन करदो मेरे काम ।।टेक।।

ना मांगु तोसे हीरे मोती, मांगु ना सुख संपती
ना मांगु तुझसे मान और ख्याती, दे दो मुझे सतसंगती
मुझको तू अपनाले ।।१।।

मुझमें नहीं है, ज्ञान और बुद्धि, नहीं शक्ति और युक्ति
में मती मद हूँ मुर्ख अज्ञानी, कैसे करु तोरी भक्ति
डगमग जिवन नैया डोले ।।२।।

पतिव्रता का सारा जीवन, पतिबिन है सुना
ऐसे ही मेरे हाल यहाँ पर, जरा भी नहीं है चैना
आश्रय तेरे चरणों में मिले ।।३।।

प्राणनाथ, सुत, और बंधु, तात मात तूम मेरे
तेरे बीन नहीं सगे सोयरे, जग में नहीं कोई मेरे
नाते जैराम के निभाले ।।४।।

भजन ४५ (तर्ज — जब आही गये है)

विद्वान ज्ञान से जाना जाय, आत्म ज्ञान से साधु कहलाये
स्वहित की बातें देखीये, निर्गुण का ही गाना गाये ।।टेक।।

लुटे आनंद सच्चिदानंद का, न्योछावर किया तन मन का
माटी सोना देखे एक जैसा, भर भर प्याला पिवे ब्रम्ह रसका
अखंड शांती को पाये, जन में जनार्दन कहलाये ।।१।।

मतवाला वना अपने धुन में, नित बसाया नयनोमें
कमल पर पानी न ठहरे, रहकर जग मे निराला कहलाये
।।२।।

स्वनिर्मित भाषा कहे जैराम, वहाँ ही मिले हमको विश्राम
संतो के ज्ञान मे चारो फल, पाने से मिले वो मोक्षधाम
उनकी वानी टले ना कभी, आसमान भी चाहें ढ़ल जाये
।।३।।

भजन ४६ (तर्ज– ते घेशील तेंव्हा)

प्रगटे शेगांव मे गजानन साई,
पृथ्वी का भार उतारन भाई ।।टेक।।
जाकी रही जैसी भावना, पुर्ण की मनोकामना
सबको दिलासा दिलाई ।।१।।
रुपमनोहर छबी निराली, दुनियां ही सारी मोह गई ।
ऐसी हैं उनकी व।णी, कभी भी ना फोल भई ।।२।।
भविष्य के भ्रम मिटाया, नित नुतन लीला दिखाया
चमत्कार में दुनिया भुलाई ।।३।।
जैरामदास कहे, उनकी महिमा कैसे बखानु
तेरा ज्ञांन कैसा जानु, मुढ़मती गुण गाई ।।४।।

भजन ४७ (तर्ज– सत्यम, शिवम, सुंदरम)

चिंतनम, सुकरम, ये धरम,
फिटे तेरा सारा भरम
सत्य ही तपस्या है, वही प्रभु का बासा हैं,
माया मन प्यासा हैं हो हो हो ऽऽऽ ।।टेक।।

कर्म बीना SSS भाग्य न खुले, फुल बीना फल ना मिले
विन गुरु ज्ञान के मुक्ति ना मिले, फिर ब्रह्म रस चखले
सतसंग में मीटे भरम ॥१॥

बीना भजन कें SSS ज़िवन अधुरा, ब्रह्म बीन ज्ञानी हारा
ना मिले कही उसको थारा, अंधें को जग अंधियारा
मरन छुटे ना जनम ॥२॥

मृग नाभी कस्तुरी रहते, उमर व्यर्थ ही खोते
यहाँ वहाँ लगाते गोते, तिरथ मंदिर घुमते
कैसें मिले ईश्वरम ॥३॥

तेरा हैं तेरे पास, लगायें पराई क्यों आस
मृग सुंघे गंधी घास, जिवन किया उसनें नास
जैराम प्रभु रोम रोम ॥४॥

भजन ४८ (तर्ज-- सात अजुबे इस दुनिया मे)

आज दुनीया मे मानव नें, आत्म विश्वास खोया
बेचैन होकर घूम रहे है, दिलमें न शांती पाया ॥टेक॥
नीति खोई, प्रीति खोई, स्वारथसे, धर्म कर्म ना रहा दुरंगी
चालोसें

जो दिलमें आये करता, सहीं बात न ध्यानमे लेता
उलझन में जकड़ा रहता हैं, क्रोध में जिवन गंवाया
॥१॥ हो ३

दया, क्षमा तो रो रही है, रे भाई,
श्रद्धाभाव की आ गई है महंगाई
शिल नम्रता जा रही रोये, सज्जन ये ठोकर खाये
देख अत्याचार से, मानव ये घबराया ।।२।। हो हो हो
इर्षा द्वेश भडक रहा हें इस जग में
पार हुई मर्यादा भी अब, सिमा से,
निकल रही हें यह संस्कृति, अनिती बढ़ते जायें
जैंरामदास कहे इससे ही, दुख सरपे आया ।।३।। हो हो हो

भजन ४९ (तर्ज-आदमी मुसाफीर हैं)

जो राम का बन गया, उसको काम क्या सताये
जिसने प्रभुसे प्रीत जोड लिया, उसे विद्वान क्या सिखाये,
जो राम का बन गया ।।टेक।।
भगवान परिवार, है सब जीव प्राणी,
हर जगह देखे एक वोही ब्रम्हज्ञानी
सारी शक्तियां विश्व को नतमस्तक हो जाये ।।१।।
हारे न हिम्मत अपनी कितना बल धारी हो
कोई ना विगाड़ें उसका, चाहे जग बैरी हो
आसमां भी ढलता हो, अपने प्रण निभाये ।।२।।
संकल्प अटल हो, सिद्धांत जिसके
प्राण हरले कोई बदले ना तत्व उसके
किर्ती छोड कर मरे वो, विजयी कहलाये ।।३।।
कहता जैराम, किया प्रभु पर विश्वास
मोह ममता को, छोड कर के आस
उन्होनें ही निर्वाण पदको पाये ।।४।।

भजन ५० (तर्ज– सुनो भैया'''')

सुनो भैया संतोकी सतगुण ही जाती ।
दया धरमसे उनकी प्रीति ॥ टेक ॥

चाहे भंगी हो चाहे मुस्लीम, चाहे हिंदु हो चाहे ईसाई ।
रखे सबपर ही सम दृष्टी ॥ १ ॥

स्वप्न में ना अपना पराया देखा,
किसीका मोबदला लेना ना सिखा,
गंगा जैसी निर्मल वृत्ती ॥ २ ॥

जिधर भीं कोई दुःखी पिडीत हों,
उधर दौडकर जाते रहे वो ।
करे तन मन की आहुती ॥ ३ ॥

पिर पराई हरना काम, करुणा प्रेम ही उसका धाम ।
ना बैर किसीसे ना ही दोस्ती ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे संतोको । खाणी बाणीसे ही परखो ।
मिलेगी तुमकी प्रचीती ॥ ५ ॥

भजन ५१ (तर्ज– राम पियासे साथी)

चेले बनानेकी सौख रे बाबा, चेले बनानेकी सौख ॥
भोजन पानेका सौख ॥ टेक ॥

जब उनकोही अपना बनाये, भेदभाव क्यो छुटना पाये ।
देखो बहीरुपी ये लोग ॥ १ ॥

माल कमाई को ये घुसे, पैसोसे भरे ये खीसे ।
भ्रम की मारे फोक ॥ २ ॥

खानेको यें दांत निराले, दिखनेके ये ढोंगी बगले।
भोली मछली खाके ॥३॥

मिटा न भेद जात पातका, हक रखे ये गुरु पदका।
बताये ये हम हैं चोख ॥४॥

जैरामदास कहे ऐसे गुरुवा, आत्मदेव से रखे बैरवा।
ना साधे इहलोक परलोक ॥५॥

भजन ५२ (धरती मेरी माता. ..)

आज अलालीसे, वढ़ गयीं महंगाई।
देखो उन्नती आज, खिसक रही ॥टेक॥

वार्तोंका जमा खर्च सब लोग करतें।
कर्मके तरफ कोई ध्यान नहीं देतें।
समाजमें आज बढ़ रही बुराई ॥१॥

पांच करे काम, पचासें करें आराम।
सदाचार से दुर ये, प्रिय इन्हे हराम
कुचली जा रही है, देखों सच्चाई ॥२॥

फँशनके साथ साथ, व्यसन भी वढ़ गया।
शोषनें वृत्ती बढ़ी, बुराईसे प्रीत किया।
तकरार करे ये भाई भाई ॥३॥

जैरामदास कहे कर उन्नती की औरध्यान।
स्वार्थको त्याग के, करु खुद की पहचान।
मानव तुझें आज, यही हैं दुहाई ॥

भजन ५३ (तर्ज– राम पियारो साथी)

परखेना पीर पराई, उसे प्रभु कैसे मिलपाई ।
निशदिन पुजा करे भाई, कुटनीती ना छुटपाई ।।टेक।।
बनाये भेष ये आला, मनमें बिचार है काला ।
दुजेका ये घोटे गला, रहम ना किसकी हैं कोई ।।१।।
पुजे पत्थर का भगवान, देवे बकरे की वो जान ।
नही उसको बीजकी पहीचान, भ्रममे उमर गमाई ।।२।।
मासको होशसे खाता, कभी ना इसको हैंयकाता ।
पत्थर के सामने शिश झुकाता, कैसे जुड़ें प्रभुसे मिताई ।।३।।
हवा हैं सच्चाई की वो, अपनाया खुदाई की वो ।
स्वारथ से लगाई है लव, सभी आत्मा परखना पाई ।।४।।
जैराम कहें प्रभु हैं एकही दाता, हर जिवोसे हैं उसका नाता ।
भरा हैं सभी पर बासा, मुरख क्यों उमर गमाई ।।५।।

भजन ५४ (तर्ज– सच्चे को हैं मेरा साथ)

पहले अपने दिल को टटोलो, फिर अच्छा बुरा बोलो ।
मन के मैल को धोलो ।।टेक।।

जब हम है चोर डाकु, दुनिया को वैसाही देखू ।
सत्य असत्य देखो अपनें तत्वको परख लो ।।१।। मनके–

सज्जनके घर रामका वासा, पापी के मनमें दुभांता की भाषा ।
अपनी मनकी आँखे खोलो, फिर अच्छा बुरा बोलो ।।२।।
मनके–

जैसा करे कर्म वैसा उसका धर्म वैसाही वो पाये मर्म ।
नर्क स्वर्ग का सुख दुःख, यहाही भोग लो ॥३॥ मनके–

जैराम कहे सिद्धांत तुम्हारे साथी, जैसी बहे तुम्हारी मती ।
अपने सच्चे विचार मिलालो, फिर अच्छा बुरा बोलो ॥४॥
मनके–

भजन ५५ (तर्ज–दिल लुटनेवाले जादुगर)

तु मनकी आंखे खोल जरा, गफलतमे क्यों तू सोया है ।
एक एक पल जा रहा है, आलस मे क्यों तु बैठा है ॥टेक॥

कौन तेरा यहाँ साथी है, और किससे प्रीती लगाई है ।
यहा दुनियादारीके रिस्ते हैं, किसका पुत्र और लुगाई है ।
अंत समय मे देते धोका, यह सब नाता झुठा है ॥१॥

कई जनम जनमके चक्कर मे, तु ठोकर वहां खाया है ।
तो भी याद ना उस दिनकी आये, माया मे तु भरमाया है ।
ऐसे कितने तुझे तन मिले, याद न उसकी करता है ॥२॥

करे गर्व तू जाती पातीका, तुने न उस ब्रह्म को परखा ।
भ्रम मे सारी उमर गमायी, प्रभु पर भरोसा न रखा ।
तु मनके वशीभूत होकरके, अपना आप लुटा है ॥३॥

जैरामदास कहे सुन प्यारे यह नरतन का सारथ करले ।
सतसंगका मार्ग धरकरके, अपना जिवन सफल कर ले ।
हित तेरा संत चरणमे, राम रतन धन मिला है ॥४॥

भजन ५६ (तर्ज- हर देश मे तु हर भेष मे तू)

हर गीत मे तू, हर भुत मे तू, निजस्वरुपसे तू एक ही हैं।
तेरीं भीन्न प्रवृत्तीया, उतनीं वृत्तीया।
तत्व से तु एकही हैं ।।टेक।।

बुंद बुंदेलेका सकल पसारा, जड चेतनमें तु ही हैं भरा।
फीर भी हैं निराला, तु अजन्मा अवीनाशी हैं ।।१।।
स्वयं निर्मीत तेरी भाषा, नित नुतन हैं तु जगदिशा।
तु छोटा नही तु बड़ा नही, तु जैसाका वैसाही हैं ।।२।।
तुझे न कोई बदल सकते, यह सृष्टी बनाकर लीला किया।
तूही दृष्टा तूही सृष्टा, अंत मे तेरा तुही हैं ।।३।।
जैराम कहे तसबीर तु तकदीर दरपन मुखडा तू ही हैं।
तेरे बीनां सुनी ना जगह, तेरेमे तुही समाया हैं ।।५।।

भजन ५७ (तर्ज- पुंडलीका भेटी)

श्रद्धा भाव दृढ़ जिसके, चित्त परम पुनीत उसके ।।टेक।।
जो भी काम करे वो प्राणी, तल्लीन होवे ब्रम्ह ध्यानी।
आत्म तत्वकी चले वो वाणी, किसीके आगे ना झूके ।।१।।
शरणागत प्रभु हो जाये, सभी ठिकाणें शांती वो पाये।
रोडे ना राहोंपर आये, प्रभुजी काम करे उसके ।।२।।
सभी जिवो में उसकी प्रीति, मानवताकी अपनाये नीति।
सुकर्मही उसकी ख्याती, उज्वल भाव हो मन के ।।३।।
जैराम कहे ब्रह्म ज्ञानी, वेदोकी ना चले वाणी।
रीद्धी सिद्धी भरे पाणी, तीनो देवता झुकें ।।४।।

भजन ५८ (तर्ज– माने नाहरगीज मन मेरा)

अलालीसे किया उसने अपनें परिवार का बेहाल ।
बीबी बच्चे भुके रहते, मीलेना उसे आटा दाल ।।टेक।।
कर्म को वो भुल गया, गमायी उमर बातो में ।
धर्म नीतिको न जाना, धरी हैं छल कपट की चाल ।।१।।
पराये धनपर वो पले, ठगबाज की चले चाल ।
भ्रम से तन ये पाले, पुण्य को किया उसने गोल ।।२।।
आदतसे है ये बुरा, सेवन करे वो मदीरा ।
गरीबो को लुटे वो लुटेरा, करे दुनियामें हरदम छल ।।३।।
कहे जैंराम अभागा, मानवता को ना जागा ।
भुमीपर भार लफंगा, जायेगा यम के वो गाल ।।४।।

भजन ५९ (तर्ज– बंसी का बजाना छोड दे)

ये तन मलीन, मन मलीन, तब न बुद्धी होवे लीन ।
कितनी भी ज्ञानकी बात करे, शांतीबीन है चरीत्र हीन ।।टेक।।
कक्षको परखे नही, कक्ष कक्ष को ।
कैंसा काबुमें करें वो मन को ।।
मिटे नही चित्त की उपाधी, कैसा भजन मे तल्लीन ।।१।।
ब्रह्म का ये ध्यान लगाये, धन पुत्र सब मे दिख पाये ।।
भ्रम भ्रम मे जाये उमरीया, जैसे जलबीन तडपे मीन ।।२।।
मृग नाभीमें कस्तूरी रहते, घास को ये रहती सुंघतें ।।
ऐसे ये तीरथ मंदीर घुमते, कही मिले ना ठिकाण ।।३।।
कहे जैराम सुरतासे चढो, तुमाये बेगम तार से ।।
ध्यानी ध्याता अलक्ष पुरुष अष्ट प्रहर ब्रह्म लीन ।।४।।

भजन ६० (तर्ज–तु निरख निरखकर बढ़ता जा)

तेरी लगन हो भजन गाने मे ।
इश तत्व को पाने मे ॥टेक॥

भावना प्रधान बना रख मनमे, भँक्ति मार्ग चलने मे ।
तत्व तत्व को परखते जारे, खोजले तू अपने मन मे ॥१॥

शिल नम्रता की होवे वृती, ब्रम्ह मे ही बहे मती ।
उसमे ही मिले तुझे शाश्वती, विवेक से ही चलनेमे ॥२॥

शब्द शब्द में बढ़ते जारे, नीज धन को तु पाते जारे ।
चीत्त बुद्धी स्थीर करले, पीया मिले वो सहज मे ॥३॥

भक्तीका जब रंग चढ़े, जीया हरदम उछले ।
अंत:करण से लहरे उठे, टकराये गगणमे ॥४॥

जैराम कहे निरविकल्प समाधी, मीटे उसकी सारी उपाधी ।
कहीं न होवे उसको उपाधी, मस्त हुवा सतगुरु धुनमें ॥५॥

भजन ६१ (तर्ज–आदमी मुसाफीर है)

जीस काम को जो करता है, वहां तल्लीन हो जाता है ।
ब्रम्ह के भाव धरे, वही सुख शांती पाता है ॥टेक॥

बोझा ढ़ोये चाहे, हल चलाये, निष्काम भाव परीश्रमके होवे ।
स्वार्थ छोडकर, जो झटता है ॥१॥

द्वेष भाव को कभी ना देखा, अपना पराया कभी ना परखा ।
समताका नाता वो निभाता है ॥२॥

पवित्र विचार, मनकें हो उजले, दया शांती, प्रीती से जूडे ।
नीती से प्रीती, सबसे करता हैं ॥३॥

कहता जैरामदास, आत्मासे प्यारा,
यही जीवनका ध्येय हमारा ।
सतब्रत सेही, हमारा नाता हैं ॥४॥

भजन ६२ (तर्ज सुबह और श्याम)

निष्काम कर्म सें जो, करता हैं काम,
वोही सुख शांती पाता, लेता विश्राम ।
जो श्रद्धासे, भक्ती करता, उसे मिलें मोक्षधाम, धाम, धाम
॥टेंक॥

दुसरे के दु:खडे को पीकर ले गरीबों की दया २
धर्म नीती सबकों सीखाये,
दुनिया मे अमर रहे, नाम, नाम, नाम ॥१॥
अपनें बल बुतेपर, जीसने भविष्य उज्वल किया
वो ही सबका मार्गदर्शक हैं ।
विचार देवे ठाम, ठाम, ठाम ॥२॥
देश समाज के कल्याण का, कार्य हात में लीया २
उसबीन चैन मन में रहेना ।
सुबह और श्याम, श्याम, श्याम ॥३॥
वो ही नर इस दुनियासे, किर्ती छोडकर गया ।
सबका भला चाहा उसने,
पुजे जैराम, जैराम, जैराम ॥४॥

भजन ६३ (तर्ज–दिल मे तुझे बिठाके)

ये मनके मन चले, छलकी चले चाले।
भावनावो के है काले, फलपलमें विचार बदले ॥टेक॥

दक्षपाती, जातीयवाद, फैला रखे हैं इन्होने।
खुन चुसे दीन गरीबोका इन दलालोनें।
आपज मे ये, फुट डाले, मतलब का खेल खेले ॥ १ ॥

फुट डालकर, मजा लूटे, बीन श्रम मिले खाने।
मन में धरकर, गंदे इरादे, लगाते मुर्गे लडानें।
किसको न सुख मिले, दुःख में ही दिन ढले ॥ २ ॥

कहे जैराम, आँख रहकर हैं यह मुरख अंधे।
धर्म नीतीसे ना, इनकी प्रीति, प्रभुसे रहते जुदे।
मानवताको ये भुले, समाज मे किये घोटाले ॥ ३ ॥

भजन ६४ (तर्ज– श्याम तेरी बंसी फुकारे)

गरीबो की दशा य देखी न जाय
किसको हैं हमदर्दी आगे वो आये ॥ टेक ॥

वड़े वडे आश्वासन, दिलासा देते।
अपना स्वारथ निकालनेंपर, पीछे मुड जाते।
माया के पागल ये, क्या समझ पाये ॥ १ ॥

तेरें मेंरे सपनें में, जीवन विताये।
झुठ मुठ के जाल बिछाकर फसाते रहै।
वो क्या जानें, दुख:पराया अपनाही गीत गाये ॥२॥ किसको··

मिठी मिठी वाणी ये हरदम चलाते
कुटनिती की भावना दिलमे ये रखते ॥
वगल में है छुरी, ये रामनाम गायें ॥ ३ ॥ किसको…

कहे जैराम अपने परसे, जन को परखते ।
दुसरे के दुःखको अपना समझते ।
पराई पीर जो हरे मेंरें मनको भाये ॥ ४ ॥ किसको…

भजन ६५ (तर्ज– गुण दोष हमारे ना देखो)

दिल जान से ईश को चाहता है ।
वो ही ईश्वर बन जाता है ॥ टेक ॥

सव शक्ति नत मस्तक होवे, कोईना उसका बीगाड पाये ।
वों सबको शांती देता है ॥ १ ॥ वोही…

पवित्र मन गंगा की धारा, ज्ञानामृत की उठती लहरा ।
अनुभव जो अपना लेता है ॥ २ ॥ वोही…

जन-जन मे वो जनार्धन देखे, किसी जिवका द्वेष ना रखे
वही ब्रम्हकी मजा लुटता है ॥ ३ ॥ वोही…

जैराम कहे नीवृती, ब्रम्हमें बहे उसकी मती ।
उन्मनी मे रम जाता है ॥ ४ ॥ वोही…

भजन ६६ (तर्ज– शहीदों के खुन का)

दर्द को मेरे कोई ना जाने, झुठे ही मारे मुझपर ताने ।
सत्य क्या है, असत्य क्या है, इसको नही किसने चिन्हे ॥टेक॥

लगन है बचपन से दिन दु:खियों की सेवा करना।
परीश्रम के कमाई पर, अपना जिवन बिताना।
कोई तर्क मनाये, कुछ भी कहे, सच झुठ माने ॥ १ ॥

उसका कर्म कुछ ना किया, पृथ्वी भार भया।
आया हु मै मानवता का फर्ज निभाने ॥ २ ॥

गण गोत्र कुटुंब परिवार मिलते ही रहेंगे।
सुख दु:ख यह भोगतेही रहेंगे।
यह तन मिला है भगवान को पाने ॥ ३ ॥

जैंरामदास कहे प्रण मेरा, सत्यतासे निभाते रहना।
किसी का न फुकट का खाना, यही तत्व मैनें ठाना।
मरना जीना खेल बनाया प्रवृतीनें ॥ ४ ॥

भजन ६७ (तर्ज– अगर है ज्ञान को पाना)

जिसने देना ही देना सीखा
लिया न कभी पैसा सुखा।
वही समाज का सखा
दाता है वो गरीबो का ॥ टेक ॥

लाया हरीयाली जिवन में, सद्‌भावना रखें सब जिवों मे
धर्म नीति का वो ही पक्का ॥ १॥

दु:खियों के दु:ख को जिसने जाना
अपनें परसे सबको पहिचाना
किसीको न दिया उसने धोका ॥ २ ॥

श्रद्धा में ही सदानंद बैठे,
हृदय मे ही ब्रह्मानंद डटे
ज्ञानी हैं वो आत्म तत्व का ॥३॥

जैंराम कहें निष्ठा से मिले प्रतिष्ठा।
दृष्टा मे ही भरा है अदृष्ठा
वो भेदिया हैं ईश्वर कें घरका ॥४॥

भजन ६८ (तर्ज– ये मेरा प्रेम पत्र पढकर)

महामानव का संदेशा।
सुधारो धर्म नीति भाषा
इसमे ही मिले शांती दिलासा ॥टेक॥

समय सुचक ज्ञान हो हर इन्सान मे
सुधार करे सब अपने कर्मो मे
बदल जायेगी सब दुर्दशा ॥१॥

करे सुविचार की क्रांती, उससे ही मिलेंगी शांती
मिटेगी अज्ञानता की भ्रांती
पर धन की मत रखे आशा ॥२॥
अटल सिद्धांत कीं हो वृती
आत्मा से ही जूड़ी हो प्रीति
सत्य ही हैं तुम्हारी तपस्या ॥३॥
जैंराम कहे पुरखों कें विचारों पर
हमारी संस्कृति है निर्भर
समाज देश को मिले दिलासा ॥४॥

भजन ६९ (तर्ज- गरीबों की जिन्दगी भारी सज़ा)

जो गरीबों की सुनें करुणा पुकार
दुनिया में होवे उसकी जयजयकार ॥टेक॥

शांती ही हर किसी की शोभा
अहिंसा की चलावे जुबां
हर ठिकाने करे सभी सत्कार ॥१॥

पर दुःख को जो अपना समझा
कहिं ना देखा धर्म दुजा
मानव जन्म लेकर जीवन नैया किया पार ॥२॥

दुःखडे में ही देखा मुखडा
हर घट मे ही राम हैं खड़ा
यही विशेष हैं उसका चमत्कार ॥३॥

कर नर नारायण की सेवा
चारों फल उसने हीं पाया
दुर्जन भी करता नमस्कार ॥४॥
जैराम कहें एक परही भरोसा
दुजा न रखा कहीं पर आशा
सब जिवों से रखे भाई चारा ॥५॥

भजन ७० (तर्ज- अगर हैं ज्ञान को पाना)

भाविक पिढ़ी हो सत्कर्मो की, भावना हो निष्काम कर्मो की
होगी उन्नती देश समाज की, झांकी भरी हो मानवता की ॥टेक॥

अंधश्रद्धा रुढ़ीवाद, इससे हो गया समाज बर्बाद
क्रोध की ज्वाला भड़क रही है, जहां देखो वहां वादविवाद
मुख मे बोली छलकपट की ॥१॥
दया धर्म कुचला जा रहा हैं,
नीति नियम बिगड़ रहा हैं
छोटे माने ना बात बडों की ॥२॥
जंराम कहे, नही सुधरोगे
धोका दिखता है, मुझको आगे
बात आयेगी विनाश की ॥३॥

भजन ७१ (तर्ज– दिल के तुकडे, तुकडे करके)

वास्ता मेरा, ना किसी के, जाती और पाती से
मेरा प्रेम है न्याय नीतिसे, सद्‌भावना की वृती से ॥टेक॥
धनी हो या, कोई भीकारी,
ब्राह्मण हो या, क्षुद्र भाई
उजले कर्म से ही मिताई ऽऽऽ
सच्चाई हो दिलमे उसके,
प्रिती जुडी हो, मानवतासे
प्रेम करे वो दया धरम मे
शिल नम्रता सद्‌गुण अंग मे,
व्यवहार करे वो समतासे ॥१॥
समाज देश कां, हित हो जिसमे
तन मन धन से, लगा हो उसमें
धुंद भरी हैं इन नैनो में

साकार करना हैं आजादी को,
शांती मिलेगी, जिसमे सबको
दुःख ना होवे फिर किसी को
जैरामदास की आस यही हैं
प्रीति जूडी हैं स्वकर्म से ॥२॥

भजन ७२ (तर्ज– ये मेरा प्रेम पत्र पढकर)

मानव की भ्रष्ट हुई नीति, छोड़ी है ईमान की नीति
फसल ना दे रही है खेती, जगत में फैली अशांती ॥टेक॥

भ्रष्टाचार का बोलबाला, सज्जन जा रहा हैं कुचला
वो झूठा अलाल निकला, दुजे का माल हडप चला
समाज में बुरा रोग फैला, निकल चली बंधुभाव प्रीति ॥१॥

जकड़े है तेरे मेरे में, एक दूजे की बुराई में
नहीं दयाभाव इनके दिल मे, उमरिया खो रहे हैं छल में
शील नम्रता के नहीं भाव, इसी से आई विपत्ती ॥२॥

जाति पाति का वडा जोर, मानव मानव हो रहा दूर
देखेना अपना कोई कसूर, कहता अपने को ही शूर
इसीसे फैली है व्यथा, भडक रही क्रोध की वृत्ति ॥३॥

भाविक पीढ़ी निर्माण होवे, जीव जग सुख शांति पावे
तेल बीन दीप न जल पावे, सत्य विन शोभा न आवे
कहे जैराम देव मानव, एक दूसरे से है दोस्ती ॥४॥

भजन ७३ (तर्ज–ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर)

रोग आते है पाप रस्ते, रोग जाते है नाम जपते
निभाले स्वहित के नाते, चलते जा सत्य को देखते ।।टेक।।

तेरा तू ही है साथी, वैसे दीखे तुझे मूर्ति
होवे जैसी तेरी वृत्ति, दृष्टि में भरी है प्रचीति
नही है मित्र शत्रु किसका भ्रम मे क्यों खाता गोते ।। १ ।।

सब कुछ बुद्धि का ही फेरा, अज्ञानता से माया मे गिरा
देखे जब स्वरुप नजारा, वैसे ही हो जावे भव–पारा
मिट जाए भेद ये सारा, जीव जब ब्रम्ह को पावे ।।२।।

निष्ठा में ही हैं प्रतिष्ठा, दृष्य जगत में 'वो' बैठा
श्रद्धा में है तेरा देवता, मन में भाव जैसे रखता
उसमे ही वो शांती पाता' उसमे ही उमर जाए ढलते ।।३।।

ज्ञान ज्योति से विवेक ज्योति, खोजले आत्मबल शक्ति
ईश्वर मिलनें की यही युक्ति, कर चित्त–मन–बुद्धि से भक्ति
जैराम कहे भक्ति बिन मुक्ति, संत ही ज्ञान को देते ।।४।।

भजन ७४ (तर्ज स्वतंत्र)

ढोंगी लोग करते हैं, सच्चे संतों की नकल
झूठी वेषभूषा से, बनाते हैं शकल
सच्चे लोगों की हारी, जा रही अकल ।।टेक।।

जिधर जिधर देखो उधर, ऐसा ही तमाशा
किसपे करेंगे हम, यहां पर भरोसा
कैसा जमाना, आया है, भैया
कहां छूप गये मेरे, कृष्ण कन्हैया
अब कैसा होगा, ये जीवन सफल ।।१।।

रामनाम का पहन करके माला
मानवता का कर रहे घोटाला
इनकी जूबा पर, है विष का प्याला
इंसानियत का करते कतल ॥२॥

ईमानदारीं का, हो रहा हैं पतन
कौन बचायेगा, आबरुषण
अजर अमर है, संतो का वचन
जैराम कहे मानवता, जा रहीं रसातल ॥३॥

भजन ७५ (तर्ज-)

इंसानियत को ठूकराने वालो
एक दिन ठूकराये जाओगे
रहम किसीका तुमको नहीं है
कैसे सुख शांती पाओगे ॥टेक॥
किसका गर्व करते हो
उसका नहीं है ख्याल

किस पर डाले झूठे जाल
होगा तुम्हारा बेहाल
सच्चे संतो की सच्ची वाणी
कब तक चलेगी तुम्हारी बैमानी
आत्मानंद ही संतो की निशानी
अंत मे प्रभू को क्या बताओगे ॥१॥

सब जीव प्राणी ईश्वर अंश है.
नीच ऊंच संतों नें नही देखा
परखा है उसने सत्गूण की सखा

सबको बनाया हैं उसने सखा
तन छूटने पर कभी न बच पाओगे ॥२॥

उंचा पदमिल हैं मानव जनम का
अब तो जागो छोडो ना मौका
जन्म से लगा रहेगा, चौरासी घूमने का
सत्संग से मिटाले, परदा भरम का
जैरामदास कहे वर्ना फिर पछताओंगे ॥३॥

भजन ७६ (तर्ज-)

संतों से जूबा, चलाओ अपने हक की.
मुरादे मिटेंगी, तब, तुम्हारी मन की
तभी कृपा होगी तुमपर, संतो की. ॥टेक॥

बकवाद करनेसे तुम्हें क्या मिलेगा सला.
यह जगत है चला चली का मेला.
आया है अकेला, जायेगा अकेला.
तर्क वितर्क से न हुआ किसी का भला
अंत में होगी पारी रोने की ॥१॥

नाता जोडा तुने लालची मन से
मन का संबंध हैं, नश्वर तन से.
माया घूमाये तूझे चौरासी फेरा
ऐंसा मौका ना मिलेगा दुबारा
अमिट निशनी हैं, बानी संतो की ॥२॥

अज्ञानता में खोता, सारी उमरिया
परदा उठाकर, घुमाले नजरिया
फसना कभी न इस मन के फदे
झूठ मूठ के हरदम, दर्शायें धंधे
जैराम कहे वनी होगी तेरी हानि—।

भजन ७७ (तर्ज– बीते हुये लम्हो की)

इंसानियत की पुजा तू करले रे इंसान
तन छुटनें पर जनता करेंगी सन्मान ॥टेक॥

नेकी का तूनें जो पहना हैं रे पैंगाम.
फुकट न खाना समाज की छदाम.
इसमे ही तेरी किर्ती हैं, होना न बेइमान. ॥१॥

परख करके चलना तू अपने हरपल करम,
इसमें छूपा है स्वधर्म का ये मरम.
इहलोक मे वन जायेगा तूरे भगवान ॥२॥

नर ही करनी से नारायण बन जाये
पापी वाल्या भी वो स्वामी कहलाये
सफल हो जायेगा, तेरा यह जीवन ॥३॥

वेश्या गणिमा देखों कितनी पापिनी
सत्कर्मीं से वह भी बन गई स्वामिनी ॥४॥
छोड गई वह संसार में अमर निशान

जैंराम कहे स्वर्ण घडी हाथ से न खोना.
नहीं तो लगेगा जन्म, मरण का रोना.
मेंरे वचनों को ह्रृदयमे रखना संभाल ॥५॥

भजन ७८ (तर्ज-)

किसानो के बलपर हैं देश की शान
जबतक न होये उनका उत्थान.
नब तक ना मिले सबको समान ।।टेक।।

तनमन को जोड़े तो धन, स्वंय ही मिलेगा
बेकारी और भूखमरी का निशान मिटेगा
एकतासे ही मिलेगा, सबको जीवन दान. ।।१।।

भेदभाव भूलके सभी मित्र बनो
द्वेषभाव हटाकर कंधा से कंधा लगाओ
ज्ञानीयो ने अज्ञानी को देना हैं ज्ञान ।।२।।

निठल्ले अलालो से बढ़ा हिंसाचार
इससे बढ़ रहा हैं देखो भ्रष्टाचार
नही रोका इसको तो डूबेगा जहान ।।३।।

जैराम कहे नाता, जोड़ो काम नाम से
सती संत करे पार कठिनाई से
आध्यात्मिक ज्ञान मे होगा सभीका उत्थान ।।४।।

***

※ आरती ※

(तर्ज– आरती दत्त राज गुरुची)

शरण मे जो कोई जाता हैं, मन वांचीत फल पाता हैं ।।टेक।।
रखकर भावना दृढ़मन में, सुमरण करें वो क्षण क्षण मे
(चाल) करुणा श्रद्धा के भाव, दिल मे बैठे गुरुराव
रखकर दया धरम चीत,
मन बुद्धि के ठाम मत,
शिल नम्रता रखे व्रत
सभी जीव का बना मित
भव बंधन से छुटता है, वो शांती पाता हैं ।।१।।
जिधर भी डाले वो दृष्टी, वहीं पर देखे गुरुमुर्ती
बहें वो ब्रह्म की मती, सभी मे देखे एक ज्योती
(चाल) तन का भुला वो भास
जगत की रही न वो आंस
लगा ऐसा ये निज ध्यास
परमानंद का उल्हास
निराकार मे ही रमता हैं, अंत में वहां समाता हैं ।।२।।
आप ही गुरु आप चेला, जगत में रहकर निराला
जन समझे उसको पगला, आत्मा रंग में रंगीला
(चाल) बिरला ही समझें चतुराई
ग्रंथो ने नेती कहलाई
शेष शारदा थके भाई
विश्व की सीमा ना रही
गुरु देवन के देवता हैं, मुढ़मती जैराम गाता हैं ।।३।।

श्री सदगुरुनाथार्पणमस्तु